ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 1, January 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 1, January 2024 |

गुप्तकालीन सामाजिक व्यवस्था में धर्म एवं महिलाओं की स्थिति

डॉ. सुभाष कुमार
सहायक आचार्य (विद्या संबल)
राजकीय महाविद्यालय, मकराना, नागौर (राजस्थान)

प्रस्तावना :

प्राचीन भारत में आर्थिक समृद्धि के फलस्वरूप नगरीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। श्रेणियों का प्रादुर्भाव नगरीकरण की प्रक्रिया से सम्बद्ध है, भारत में नगरों का अस्तित्व सबसे पहले हड़प्पा की सभ्यता से सम्बद्ध हैं, यहाँ से अनेक प्रकार की मुहरों प्राप्त हुई हैं, जिससें यह सिद्ध होता है कि इस सभ्यता के लोग व्यापार में संलग्न थे। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में श्रेणी नामक संस्था के माध्यम से उत्पादन तथा विनिमय का मार्ग प्रशस्त किया गया। यह उन पेशेवर लोगों, व्यापारियों अथवा शिल्पियों का समूह था, जो संघठित होकर काम करते थे। इन संगठनों के कारण ही व्यापार–वाणिज्य के लिए आवश्यक उत्पादन में वृद्धि हुई। ये शहरीकरण का महत्वपूर्ण कारक बने। बहुत से शिल्पी, कारीगर श्रेणियों में शामिल हो गये क्योकि अलग–अलग व्यक्तियों के लिए पेशेवर लोगों के संगठनों से स्पर्धा करना कठिन था। इसके अतिरिक्त श्रेणियाँ अपने सदस्यों को सुरक्षा प्रदान करती थीं।

दूसरे चरण में मौर्यो का शासन आता है। मौर्य काल में व्यवस्थित शासन के कारण राज्य नियत्रित अर्थव्यवस्था का दौर आता है। इस काल मे शहरों तथा गाँवों दोनों का विकास होता है। इस काल में कृषि के साथ ही विकसित उद्योग, श्रमिक बाजार, नए यातायात के साधनों का विकास, अच्छी सड़कों का निर्माण हुआ था। इस काल में हमारा सम्पर्क भारत के पड़ोसी देशों से होने के कारण विदेशों के साथ व्यापार को बल मिला। अनेक व्यापारिक केन्द्रों से समुद्र के किनारें बन्दगाहों के माध्यम से विदेशी व्यापार को स्थान मिला। इन्होंने अपने संगठनों के द्वारा उद्योगों को विकसित किया। प्रस्तुत शोध–पत्र में गुप्तकालीन समय की सामाजिक व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है तथा विशेष रूप से इस काल में महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

- गुप्त कालीन समय की सामाजिक व्यवस्था का विश्लेषण करना
- गुप्त कालीन सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की दशा का वर्णन करना
- इस काल में महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान का तुलनात्मक अध्ययन करना
- इस काल में धार्मिक संरचना का वर्णन करना

उपलब्ध साहित्य की समीक्षा :

उक्त विषय से संबन्धित निम्न उपलब्ध साहित्यों का अध्ययन कर शोध–पत्र लेखन में सहायता ली गयी है–

मिश्र, जयशंकर (2013) प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास शीर्षक ग्रन्थ में शोधात्मक व वैज्ञानिक पद्धति को आधार बनाकर प्राचीन भारतीय इतिहास की श्रृंखलाबद्ध जानकारी प्रदान की है। प्राचीन भारत में विभिन्न वर्णो के बीच होने वाले संघर्ष का मुख्य कारण ब्राह्मणों के विशेषाधिकार को माना है। ब्राह्मण चाहते थे कि समाज का प्रत्येक वर्ण उन पर निर्भर रहे और उनकी श्रेष्ठता को स्वीकार करे। इस ग्रन्थ में भारतीय समाज का उत्कर्ष, वर्ण एवं जाति– व्यवस्था, दास –प्रथा, आश्रम–व्यवस्था, पुरूषार्थ, संस्कार, विवाह, परिवार, महिलाओं की दशा, शिक्षा, धर्म आदि विषयों का संक्षिप्त वर्णन किया है।

पुरूषोत्तम, संगीता (2013) इन्होंने ''भारत में गुप्कालीन सामाजिक व्यवस्था'' नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया है। इनका शोध सामाजिक स्तर के विश्लेषण हेतु स्तर प्रदान करता है। प्राचीन भारतीय समाज का ढाँचा गुप्त काल में भी स्थिर रहा। गुप्तकालीन समाज व्यवस्था की झांकी पुराणों, स्मृति–ग्रन्थों व अभिलेखों से प्राप्त होती है। भारतीय समाज की प्रारम्भिक व्यवस्था चार वर्णों पर आधारित थी– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र।

गुप्तकालीन समय में सामाजिक स्थिति :

गुप्तकालीन भारतीय समाज परंपरागत 4 जातियों :–

1. ब्राह्मण,
2. क्षत्रिय,
3. वैश्य एवं
4. शूद्र

में विभाजित था। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में तथा वराहमिहिर ने वृहतसंहिता में चारों वर्णो के लिए अलग अलग बस्तियों का विधान किया है।

न्याय संहिताओं में यह उल्लेख मिलता है कि ब्राह्मण की परीक्षा तुला से, क्षत्रिय की परीक्षा अग्नि से, वैश्य की परीक्षा जल से तथा शूद्र की विषय से की जानी चाहिए। पहले की तरह ब्राह्मणों का इस समय भी समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। गुप्त काल में जाति प्रथा उतनी जटिल नहीं रह गई थी जितनी परवर्ती कालों। ब्राह्मणों ने अन्य जातियों के व्यवसायों को अपनाना आरम्भ कर दिया था।

मृच्छकटिकम के उल्लेख से यह प्रमाणित होता है कि चारुदत्त नामक ब्राह्मण वाणिज्य का कार्य करता था। उसे ब्राह्मण का 'आपद्धर्म' कहा गया है। इसके अतिरिक्त कुछ ब्राह्मण वंश जैसे वाकाटक एवं कदम्ब का उल्लेख मिलता है। गुप्त काल के पूर्व ब्राह्मण केवल छः कार्य – अध्ययन, अध्यापन, पूजा–पाठ, यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना, माना जाता था।

ब्राह्मणों के अतिरिक्त कुछ वैश्य शासक जैसे हर एवं सौराष्ट्र, अवन्ति, मालवा के शूद्र शासकों आदि के विषय में भी जानकारी प्राप्त होती है। स्कन्दगुप्त के इंदौर ताम्रपत्र अभिलेख में कुछ क्षत्रियों द्वारा वैश्य का कार्य करने का उल्लेख मिलता है।

"ह्वेनसांग"ने क्षत्रियों के कर्मनिष्ठा की प्रशंसा की है तथा उन्हें निर्दोष, सरल, पवित्र, सीधा और मितव्ययी कहा है। उसके अनुसार क्षत्रिय राजा की जाति थी। कुछ गुप्तकालीन ग्रंथों में ब्राह्मणों को निदेर्शित किया गया है कि वे शूद्रों द्वारा दिए गए अन्न को ग्रहण न करें, जबकि बृहस्पति ने संकट के क्षणों में ब्राह्मणों द्वारा शूद्रों और दासों से अन्न ग्राहण करने की आज्ञा दी। इस काल में शूद्रों द्वारा सैनिक वृत्ति अपनाने हुए इन्हें व्यापारी, कारीगर एवं कृषक होने की अनुमति प्रदान की।

ह्वेनसांग के विवरण एवं नृसिंह पुराण के उल्लेख से यह संकेत मिलता है कि शूद्रों ने कृषि कार्य को अपना लिया था। इस प्रकार गुप्त काल में इन्हें रामायण, महाभारत, एवं पुराण सुनने का अधिकार मिल गया। याज्ञवल्क्य ने लिखा है कि शूद्र वर्ग नमः शब्द का प्रयोग कर पंच महायज्ञ कर एकता है। मार्कण्डेय पुराण में दान करना और यज्ञ करना शूद्र का कर्तव्य बताया गया है।

मिश्रित जातियाँ

गुप्त काल में अनेक मिश्रित जातियों का भी उल्लेख मिलता है जैसे – मूर्द्धावषिक्त, अम्बष्ठ, पारशव, उग्र एवं करण। इनमें मुख्य रूप से अम्बष्ठ, उग्र, पारशव की संख्या गुप्तकालीन समाज में अधिक थी।

अम्बष्ठ

- ब्राह्मण पुरुष एवं वैष्य से उत्पन्न संतान अम्बष्ठ कही गई।
- विष्णु पुराण में इन्हें नदी तट का निवासी माना गया है।
- मनु ने इनका मुख्य व्यवसाय चिकित्सा बताया है।

पराशव

- इस जाति की उत्पत्ति ब्राह्मण पुरुष एवं शूद्र स्त्री से हुई है इन्हें निषाद भी कहा जाता है।
- पुराणों में इनके विषय में जानकारी मिलती है।

उग्र

- गौतम के अनुसार वैश्य पुरुष एवं शूद्र स्त्री से उत्पन्न जाति उग्र कहलाई पर स्मृतियों का मानना है कि इस जाति की उत्पत्ति क्षत्रिय पुरुष एवं शूद्र जाति की स्त्री से हुई है। इनका मुख्य कार्य था बिल के अन्दर से जानवरों को बाहर निकाल कर जीवन–यापन करना।
- फाह्यान ने गुप्तकालीन समाज में अस्पृश्य (अछूत) जाति के होने की बात कही है। स्मृतियों में इन्हें 'अन्त्यज' व 'चाण्डाल' कहा गया है।
- पाणिनी ने इसका उल्लेख 'निरवसित' शूद्र के रूप में किया है। सम्भवत इस जाति के उत्पत्ति शूद्र पुरुष एवं ब्राह्मण स्त्री से हुई। यह जाति के बाहर निवास करती थी, इनका मुख्य कार्य था शिकार करना एवं शमशान घाट की रखवाली करना।
- गुप्त काल में लेखकीय, गणना, आय–व्यय का हिसाब रखने आदि कार्यो को करने वाले वर्ग को कायस्थ कहा गया। सम्भवतः इनकी उत्पत्ति भूमि एवं भू राजस्व के हस्तान्तरण के कारण हुई। गुप्त काल के प्राप्त अभिलेखों में नाम उल्लेख प्रथम कायस्थ या ज्येष्ठ कायस्थ के रूप में हुआ।

गुप्तकालीन समाजिक व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति :

गुप्तकालीन समाज में महिलाओं की स्थिति के विषय में इतिहासकार 'रोमिला थापर' ने लिखा है कि 'साहित्य और कला में तो नारी का आदर्श रूप झलकता है पर व्यावहारिक दृष्टि से देखने पर समाज में उनका स्थान गौण था। पितृप्रधान समाज में पत्नी को व्यक्तिगत सम्पत्ति समझा जाता था। पति के मरने पर पत्नी को सती होने के लिए प्रेरित किया जाता था। उत्तर भारत की कुछ सैनिक जातियों के परिवारों में बड़े पैमाने पर सती होने की प्रथा उल्लेख है। प्रथम सती होने का प्रमाण 510 ई. के भानुगुप्त के एरण के अभिलेख से मिलता है जिसमें किसी गोपराज (सेनापति) की मृत्यु पर उसकी पत्नी के सती होने का उल्लेख है। गुप्त काल में पर्दा प्रथा का प्रचलन केवल उच्च वर्ग की महिलाओं में था।

महिलाओं के अधिकारों की वृद्धि निम्न प्रकार से रही –

1. फाह्यान एवं ह्वेनसांग के अनुसार इस समय पर्दा प्रथा प्रचलन नहीं था।
2. नारद एवं पराशर स्मृति में 'विधवा विवाह' के प्रति समर्थन जताया गया है।
3. गुप्तकालीन समाज में वेश्याओं के अस्तित्व के भी प्रमाण मिलते हैं, पर इनकी वृत्ति की निन्दा की गई।
4. गुप्त काल में वेश्यावृति करने वाली महिलाओं को 'गणिका' कहा जाता था। 'कुट्टनी' उन वेश्याओं को कहा जाता था जो वृद्ध हो जाती थी।
5. किन्तु गुप्त काल में महिलाओं के धन संबधी अधिकारों की वृद्धि हुई। स्त्री धन का दायरा बढ़ा।
6. कात्यायन ने स्त्री को अचल सम्पत्ति की स्वामिनी माना है।
7. गुप्त काल के स्मृतिकारों के अनुसार पुत्र की अचल सम्पत्ति की स्वामिनी माना है।

8. गुप्त काल के स्मृतिकारों के अनुसार पुत्र के अभाव में पुरुष की सम्पत्ति पर उसकी पत्नी का प्रथम अधिकार होता था। (याज्ञवल्क्य स्मृति)
9. अपुत्र पति के मरने पर विधवा पत्नी को उसको उत्तराधिकारी – याज्ञवल्क्य, बृहस्पति और विष्णु मानते हैं।
10. महिलाओं के स्त्रीधन पर प्रथम अधिकार उसकी पुत्रियों का होता है। (विज्ञानेश्वर)
11. महिलाओं की सम्पत्ति के अधिकार पर सर्वाधिक व्याख्या याज्ञवल्क्य ने दी है। गुप्तकाल में ब्राह्मण और क्षत्रिय को संयुंक्त रूप से 'द्विज' कहा गया है।
12. याज्ञवल्क्य एवं बृहस्पति ने स्त्री को पति की सम्पत्ति का उत्तराधिकारिणी माना है।
13. इस समय उच्च वर्ग की कुछ महिलाओं के विदुषी और कलाकार होने का उल्लेख मिलता है।
14. अभिज्ञान शकुन्तलम् में अनुसूया को इतिहास का ज्ञाता बताया गया है।
15. मालवी माधव में मालती को चित्रकला में निपुण बताया गया है।
16. अमरकोष स्त्री शिक्षा के लिए 'आचार्यी', 'अपाध्यायीय' तथा 'उपाध्यया' शब्दों को व्यवहार किया गया है।
17. गुप्तकाल के सिक्कों पर महिलाओं जैसे – कुमारदेवी, तथा लक्ष्मी के चित्र उच्च वर्ग के महिलाओं के सम्मानसूचक है।
18. पर्दा प्रथा का प्रचलन था।
19. बाल विवाह एवं बहुविवाह की प्रथा व्यापक हो गई थी।
20. 'मेघदूत' में उज्जयिनी के महाकाल मंदिर में कार्यरत देवदासियों का वर्णन मिलता है।

मनु के अनुसार जिस स्त्री को पति ने छोड़ दिया हो या जो विधवा हो गई हो, यदि वह अपनी इच्छा से दूसरा विवाह करें तो वह 'पुनर्भू' तथा उसकी संतान 'पनौर्भव' कहा जाता था।

गुप्तकालीन धार्मिक स्थिति

गुप्त साम्राज्य को ब्राह्मण धर्म व हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान का समय माना जाता है। हिन्दू धर्म विकास यात्रा के इस चरण में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए जैसे मूर्तिपूजा हिन्दू धर्म का सामान्य लक्षण बन गई। यज्ञ का स्थान उपासना ने ले लिया एवं गुप्त काल में ही वैष्णव एवं शैव धर्म के मध्य समन्वय स्थापित हुआ। ईश्वर भक्ति को महत्त्व दिया गया। तत्कालीन महत्त्वपूर्ण सम्प्रदाय के रूप में वैष्णव एवं शैव सम्प्रदाय प्रचलन में थे।

वैष्णव धर्म

यह गुप्त शासकों का व्यक्तिगत धर्म था। अनेक गुप्त राजाओं ने 'परामभागवत' की उपाधि धारण की। इन राजाओं ने अपनी राजाज्ञाएं गरुड़ध्वज से अंकित करवायीं। चन्द्रगुप्त द्वितीय एवं समुद्रगुप्त द्वारा जारी किए गए सिक्कों पर विष्णु के वाहन गरुड़ की आकृति खुदी मिली है। इसके अतिरिक्त वैष्णव धर्म के कुछ अन्य चिह्न जैसे शंख, चक्र, गदा, पद्म, लक्ष्मी का अंकन भी गुप्तकालीन सिक्कों पर मिलता है। गुप्तकालीन महत्त्वपूर्ण अभिलेख स्कन्दगुप्त का 'जूनागढ़' एवं बुधगुप्त का 'एरण अभिलेख' विष्णु स्तुति से ही प्रारम्भ हुए हैं। चक्रपालित नाम से गुप्तकालीन कर्मचारी ने विष्णु के एक मंदिर का निर्माण करवाया था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने विष्णुपद पर्वत के शिखर पर विष्णुध्वज की स्थापना की। गुप्तकालीन कुछ अभिलेखों ने विष्णु को 'मधुसूदन' कहा गया है। वैष्णव धर्म गुप्त काल में अपने चरमोंत्कर्ष पर थी। 'अवतारवाद' वैष्णव धर्म का प्रधान अंग था।

शैव धर्म

गुप्त राजाओं की धार्मिक सहिष्णुता की भावना के कारण ही शैव धर्म का भी विकास इस काल में हुआ, जबकि गुप्तों का व्यक्तिगत धर्म वैष्णव धर्म था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का सेनापति वीरसेना प्रकांड शैव विद्धान था। उसने उदयगिरि पहाड़ी के अंदर शैवों के निवास के लिए गुफा का निर्माण कराया था। गुप्तों के समय में मथुरा में 'महेश्वर' नाम का शैव सम्प्रदाय निवास कर रहा था। कालिदास के 'मेघदूत' के वर्णन में उज्जयिनी में एक महाकाल के मन्दिर का वर्णन है। शैव धर्म का एक और अनुयायी पृथ्वीषेण, जो कुमारगुप्त प्रथम का सेनापति था, ने करमदण्डा नामक स्थान पर एक शिव की प्रतिमा स्थापित की। सामंत महाराज हस्तिन के खोह अभिलेख में 'नमो महादेव' का उल्लेख है। इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि गुप्त काल में वैष्णव धर्म के सामने शैव धर्म की अवहेलना नहीं की गयी। गुप्तकाल में भगवान शिव की मूर्तियां मानवीय आकार एवं लिंग के रूप में बनाई गई थी। मानवाकार शिव की मूर्तियों में कोसाम से प्राप्त मूर्ति महत्त्वपूर्ण है। लिंग मूर्तियों में नागोद से प्राप्त एकलिंग मुखाकृति महत्त्वपूर्ण है। शिव के अर्धनारीश्वर रूप की कल्पना एवं शिव तथा पार्वती की एक साथ मूर्तियों का निर्माण सर्वप्रथम इसी काल में आरम्भ हुआ। शैव एवं वैष्णव धर्म के समन्वय को दर्शाने वाले भगवान 'हरिहर' की मूर्तियों का निर्माण गुप्त काल में ही हुआ। त्रिमूर्ति पूजा के अन्तर्गत इस समय ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की पूजा आरम्भ हुई।

'वामन पुराण' के वर्णन के अनुसार गुप्त काल में चार शैव सम्प्रदायों का प्रचलन था –

- शैव
- पाशुपत
- कापालिक
- कालामुख।

सूर्य पूजा

गुप्त काल में सूर्योपासक लोगों का भी सम्प्रदाय था। विक्रम संवत 529 के 'मंदसौर शिलालेख' के प्रारम्भिक कुछ श्लोंकों में सूर्य भगवान की स्तुति की गई है। बुलन्दशहर जिले के 'माडास्यात' नामक स्थल पर सूर्य मंदिर होने के साक्ष्य मिले हैं। मिहिरकुल के 'ग्वालियर अभिलेख' से मातृचेट नामक नागरिक द्वारा ग्वालियर में पर्वत श्रृंग पर एक प्रस्तर सूर्य मंदिर बनवाने के साक्ष्य मिले है। सूर्य के अनेक नामों में से अभिलेखों में 'लोकार्क', 'भास्कर', 'आदित्य', 'वरुणस्वामी' एवं 'मार्तण्ड' नाम मिलते हैं।

बौद्ध धर्म

यद्यपि गुप्त शासकों ने इस धर्म को अपना संरक्षण प्रदान नहीं किया, फिर भी यह धर्म विकसित हुआ। इनके समय में बौद्ध धर्म के मुख्य केन्द्र के रूप में गया, मथुरा, कौशाम्बी, एवं सारनाथ प्रसिद्ध थे। गुप्तों के समय में ही प्रसिद्ध बौद्ध विहार नालंदा की स्थापना की गई। सांची के एक लेख के अनुसार चन्द्रगुप्त द्वितीय ने किसी आम्रकर्ट्रब नाम के बौद्ध धर्म के अनुयायी को अपने राज्य में ऊंचे पद पर नियुक्ति किया था। इस व्यक्ति ने काकनादाबार के महाविहार को 25 दीनार दान में दिया था। गुप्त काल के प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य वसुबन्धु, असंग एवं दिङनाग थे। इन आचार्यो ने अपनी विद्वता के द्वारा भारतीय ज्ञान के विकास में सहयोग किया। चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार गुप्त काल में बौद्ध धर्म अपने स्वाभाविक रूप में विकसित हो रहा था। बौद्ध धर्म की महायान शाखा के अन्तर्गत माध्यमिक एवं योगचार सम्प्रदाय का विकास हुआ। इसमें योगाचार सम्प्रदाय गुप्तों के समय में काफी प्रचलित था। गुप्त काल में ही आर्यदेव ने 'चतुश्शतक' एवं असंग ने 'महायान संग्रह', योगाचार भूमिशास्त्र तथा महायान सूत्रालंकार जैसे ग्रंथों की रचना की।

जैन धर्म

गुप्तकाल में जैन धर्म का विकास हुआ। गुप्तों के समय में ही मथुरा (313 ई.) एवं वल्लभी (453 ई.) में जैन सभाएं आयोजित की गई। इस समय मूर्तियों के निर्माण के अन्तर्गत महावीर एवं अन्य तीर्थंकर की सीधी खड़ी हुई एवं पालथी मारकर बैठी हुई मूर्तियां निर्मित की गई। गुप्तकाल में जैन धर्म मध्यमवर्गीय लोगों एवं व्यापारियों में खूब प्रचलित था। कदंब एवं गंग राजाओं ने इस धर्म को संरक्षण प्रदान किया। 426 ई. के कुमारगुप्त प्रथम के उदयगिरि अभिलेख में किसी शंकर नाम के जैन धर्म अनुयायी द्वारा पार्श्र्वनाथ की मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख मिलता है। पहाड़पुर से प्राप्त लेखों में जैन मंदिरों को भूमिदान का उल्लेख मिलता है।

'कहौम लेख' से स्पष्ट होता है कि स्कंदगुप्त के समय मद्र नाम के व्यक्ति ने पांच जैन तीर्थंकर– ऋषभनाथ (आदिनाथ), शांतिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर की मूर्तियों की स्थापना कराई। मथुरा अभिलेख के वर्णन के अनुसार कुमारगुप्त प्रथम के समय में हरिस्वामिनी नाम की जैन मतावलम्बी महिला ने जैन मंदिर को दान दिया। गुप्तों के समय जैन धर्म मगध से लेकर कलिंग, मथुरा, उदयगिरि, तमिलनाडु तक फैला था।

निष्कर्ष :

मौर्य काल में महाकाव्य कालीन समाज व्यवस्था और उत्तर–वैदिक काल की समाज व्यवस्था में कोई विशेष अन्तर नहीं था। ब्राह्मण का आदर और सम्मान पहले की भाँति ही बना रहा। वह अपनी विद्वता के लिए सर्वत्र सम्मानीय था, विद्वान, अविद्वान, चाहे जिस भी अवस्था पूर्व गुप्तकालीन सामाजिक आयाम हो उसका अनादर नहीं किया जा सकता था। धार्मिक कार्यों और यज्ञादि करके ब्राह्मण समाज की उन्नति के लिए कामना करता था, उसकी सेवाओं के कारण ही उसे बहुत से विशेषाधिकार भी प्राप्त थे। ब्राह्मण से इस समय न तो कर लिया जा सकता था न ही उसका वध किया जा सकता था। किन्तु अगर कोई ब्राह्मण अपने धर्म का त्याग करता था तो उसे घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। वेद–ज्ञान और शास्त्र ज्ञान से रहित ब्राह्मण उसी प्रकार होता था जैसे बिना पंख के पक्षी, बिना जल के कुआं और बिना अग्नि की ग्राम। धर्म के विपरीत कार्य करने वाला ब्राह्मण शूद्र के समान होता था और समाज में उसे निन्दनीय माना जाता था। यदि कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य की वृत्ति को अपना लेता था तो उसे कुत्ते और भेड़िये के समान मान लिया जाता था। इन सभी साक्ष्यों के आलोक में इस बात की सूचना मिलती है कि इस काल में समाज में वर्ण और धर्म विरूद्ध कार्य स्वीकार नहीं किये जाते थे।

इस काल में कुछ ऐसे ब्राह्मणों के उल्लेख मिलते हैं जिन्होने अपनी सुविधा और आवश्यकता के अनुसार दूसरे वर्णों के कार्यों को अपना लिया था ऐसे ब्राह्मणों को ब्रह्मसम, देवसम, शूद्रसम, चाण्डालसम, क्षतसम और वैश्यसम श्रेणियों में विभाजित किया गया था। द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और अश्वत्थामा ब्राह्मण होकर भी क्षत्रिय कर्म को करते थे, कुछ ब्राह्मण व्यापार वाणिज्य भी करते थे जिन्हें वैश्य कर्म कहा गया है। चौरकर्म, नटकर्म और नर्तककर्म करने वाले ब्राह्मणों को शूद्रसम या चाण्डालसम कहा गया है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यद्यपि इस काल में धर्मच्यूत कार्य निन्दनीय थे फिर भी ब्राह्मणों को आपद्काल में दूसरे वर्णों के कार्यों को करने की सुविधा काफी हद तक दी गयी थी। तीसरी सदी ई.पू. तक आकर वर्ण–व्यवस्था पूर्णरूप से प्रतिष्ठित हो चुकी थी।

संदर्भ सूची :

1. ओमप्रकाश; प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, विश्व प्रकाशन नई दिल्ली, 1999 ई.।
2. उपाध्याय, भगवतशरण; गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, 1969।
3. उपाध्याय, वासुदेव; गुप्त साम्राज्य का इतिहास, किताब महल, इलाहाबाद, 1939।
4. झा, डी.एन.; मौर्यातर तथा गुप्ताकलीन राजस्व व्यवस्था, हरीश चन्द्र सत्यार्थी (अनुवादक), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977।

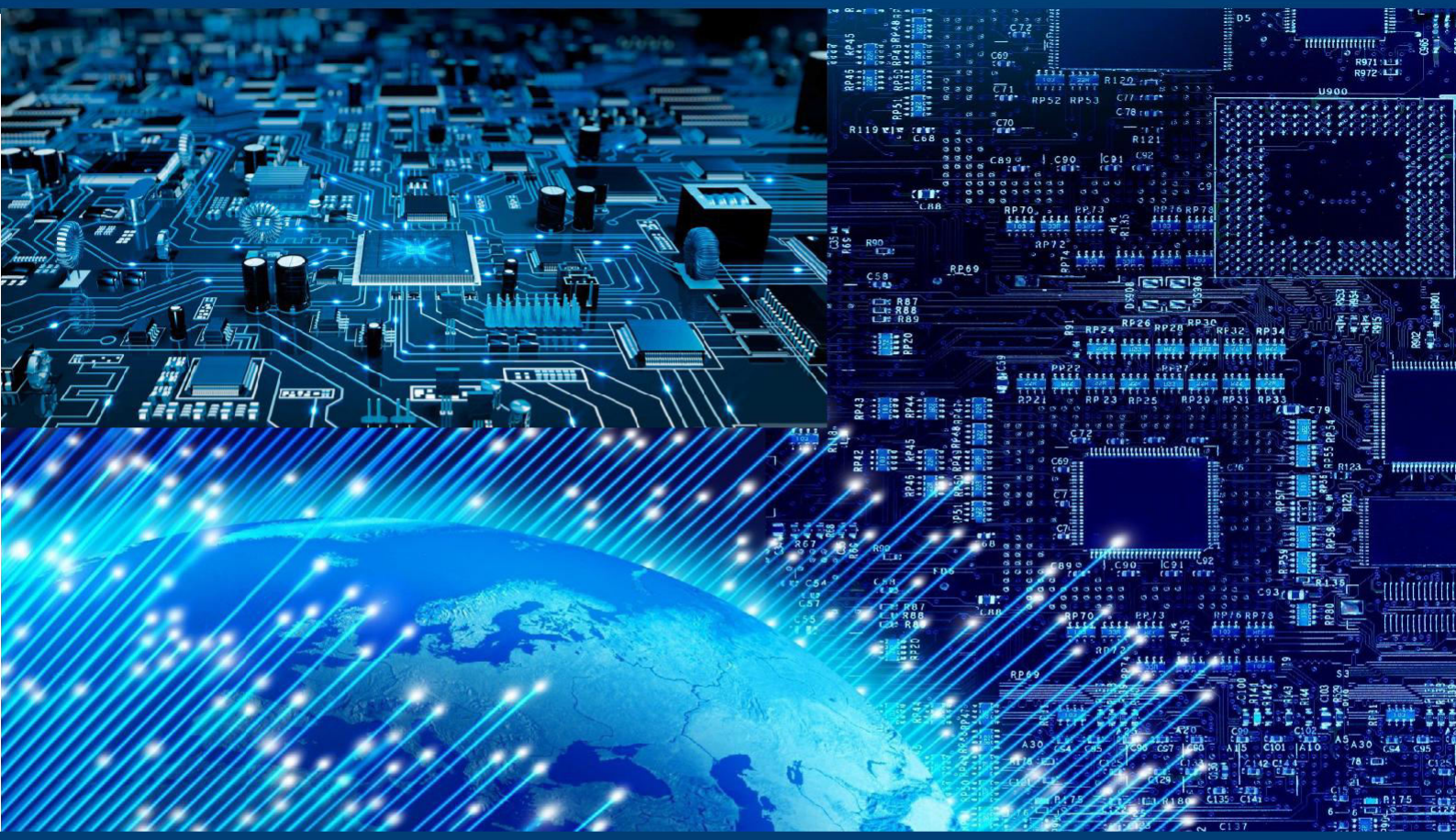

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |